1:57 PM

Sanskrit Dept. R.K.D...
Madhu. R K, Principal R, You

सुप्रभात !!! 10:35 am

आज हम महाकवि बाण रचित कादम्बरी के 'शुकनासोपदेश' के और आगे के गद्यांश का अध्ययन करेंगे। 10:35 am

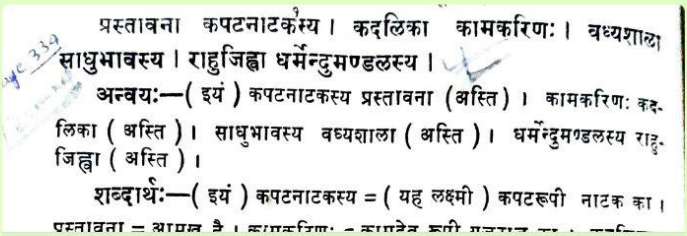

प्रस्तावना कपटनाटकस्य। कदलिका कामकरिणः। वध्यशाला साधुभावस्य। राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य।

अन्वयः—(इयं) कपटनाटकस्य प्रस्तावना (अस्ति)। कामकरिणः कदलिका (अस्ति)। साधुभावस्य वध्यशाला (अस्ति)। धर्मेन्दुमण्डलस्य राहुजिह्वा (अस्ति)।

शब्दार्थः—(इयं) कपटनाटकस्य = (यह लक्ष्मी) कपटरूपी नाटक का।

PDF कादम्बरी -शुकनासोपदेश.pdf

3 pages • PDF 10:35 am

आगे का गद्य भाग है। ध्यानपूर्वक पढ़ें। 10:36 am

0:15 5a55ea5cf8f94c... 10:55 am

शुकनासोपदेश के आगे का संस्कृत गद्य भाग। 10:55 am

0:24 2006ba6b16914... 10:56 am

उपरोक्त गद्य भाग का हिंदी अर्थ 10:56 am

महाकवि बाणभट्ट कृत कादंबरी के शुकनासोपदेश के उपरोक्त गद्य भाग में महामंत्री शुकनास भावी युवराज चन्द्रापीड को लक्ष्मी के दोषों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार सूत्रधार आदि प्रवेशात्मक प्रस्तावना से नाटक का प्रारंभ होता है उसी प्रकार लक्ष्मी से छलनाओं का श्री गणेश होता है। जिस प्रकार मत्त गजेंद्र

Type a message

इयम् नियतम् चलति । पुस्तमयी अपि (इयम्) इन्द्रजालम् आचरति । उत्कीर्णा अपि (इयम्) विप्रलभते । श्रुता अपि अभिसन्धत्ते । चिन्तिता अपि (इयम्) वञ्चयति ।

सरलार्थः—नहि तं पश्यामि = ऐसे (किसी व्यक्ति) को नहीं देखता हूँ । यो हि = जो कि । अनया अपरिचितया=परिचय नहीं रखनेवाली (कृतघ्न) इस (लक्ष्मी) के द्वारा । निर्भरं न उपगूढः = कस कर आलिंगित न हुआ हो । वा = अथवा । यः = जो कि । न विप्रलब्धः = नहीं ठगा गया हो । आलेख्यगता अपि इयम् = चित्र में लिखित होने पर भी यह । नियतम्=निश्चितरूप से । चलति = चल देती है । पुस्तमयी अपि (इयम्) = (मिट्टी या लकड़ी की) गुड़िया बनी रहने पर भी (यह लक्ष्मी) । इन्द्रजालम् आचरति = जादू का खेल दिखलाती है । उत्कीर्णा अपि = पत्थर में खुदी हुई भी (यह लक्ष्मी) । विप्रलभते = धोखा दे देती है । श्रुतापि = सुनी हुई भी (सुनाई दे जाने पर भी, यह लक्ष्मी) । अभिसन्धत्ते = छल करती है । चिन्तिता अपि (इयम्) = ध्यान की जाने पर भी (यह) । वञ्चयति = ठगती है ।

समासः—स्पष्टम् ।

सरलार्थः—अज्ञातयाप्यनया सुदृढमनाश्लिष्टोऽवञ्चितो वा न कश्चन सज्जनः दृश्यते । चित्रलिखितापि पलायते । मृत्काष्ठादिनिर्मिता पुत्तलिकारूपापि मायाजालमातनोति । उत्कीरितापि वंचयति । आकर्णितापि संशयमुत्पादयति । प्राप्त्याशया ध्यानपथमानीतापि विप्रलभते ।

(चंचलेयम् लक्ष्मीः कपटव्यवहारादिना सर्वथा वंचयत्येव लोकान् इति भावः) ।

अनुवादः—ऐसा कोई भी नौजवान नहीं होगा जिसने विना जान-पहचान की मेहमान बनने वाली इस मायाविनी लक्ष्मी के द्वारा दृढ़ता से आलिंगित होकर धोखा न खाया हो । क्योंकि—निश्चय ही यह लक्ष्मी चित्रलिखित होने चल देने वाली है । मिट्टी और लकड़ी आदि की गुड़िया बनी हुई जादू का खेल दिखाने वाली है । पत्थर में खुदी हुई भी धोखा दे देने वा सुनी हुई भी यह छलनेवाली है । प्राप्त होने की आशा से ध्यान की हुई भी

समासः—कपटम् एव नाटकम् इति कपटनाटकम्, तस्य कपटनाटकस्य। काम एव करी, तस्य कामकरिणः। इन्दोः मण्डलम् इति इन्दुमण्डलम्, धर्म एव इन्दुमण्डलम् इति धर्मेन्दुमण्डलम्, तस्य धर्मेन्दुमण्डलस्य।

सरलार्थः—यथा नाटकम् प्रस्तावनया प्रारभ्यते तथैव कूटव्यवहारोऽपि लक्ष्म्यानया उपस्थाप्यते। यथा करीन्द्रः कदलीकानने स्वैरं विहरति तथैव कामदेवोऽपि सत्याम् लक्ष्म्याम् स्वेच्छं विलसति। यथा वध्यभूमिः हन्यमानान् जन्तून् गतासून् कुरुते तथैवेयमपि सौजन्यं हिनस्ति। यथा राहोः रसनया रजनीपतिर्लेलिह्यते तथानयापि धर्मो ग्रस्यते।

अनुवादः—जिस प्रकार सूत्रधारादिप्रवेशात्मक प्रस्तावना से नाटक का प्रारम्भ होता है, उसी प्रकार लक्ष्मी से छलनाओं का श्रीगणेश होता है। जिस प्रकार मत्त गजेन्द्र केले के वन में विहार करते हैं उसी प्रकार कामदेव भी लक्ष्मी की छाया में ही पलता है। जिस प्रकार वध्यशाला प्राणियों को मौत के घाट उतार देती है, उसी प्रकार लक्ष्मी भी मनुष्य के सौजन्य को समाप्त कर देती है। जिस प्रकार राहु की रसना से राकेश ग्रस्त हो जाता है, उसी प्रकार लक्ष्मी भी धर्म को निगल जाती है।

नहि तं पश्यामि। यो ह्यपरिचितयानया न निर्भरमुपगूढः, यो वा न विप्रलब्धः। (यतो हि) नियतमियमालेख्यगतापि चलति। [1]पुस्तमय्यपि इन्द्रजालमाचरति। उत्कीर्णापि विप्रलभते। श्रुतापि अभिसन्धत्ते। चिन्तितापि वञ्चयति।

अन्वयः—तम् नहि पश्यामि, यो हि अनया अपरिचितया निर्भरं (यथा स्यात्तथा) न उपगूढः, वा यः न विप्रलब्धः। (यतो हि) आलेख्यगता अपि

अलङ्कारः—यहाँ 'नियत' से 'वंचयति' तक विरोधाभास अलङ्कार है।

१. मिट्टी, लकड़ी, वस्त्र, चर्म, अथवा लोहरत्न की बनी हुई स्त्री-मूर्ति, पुतली या गुड़िया को 'पुस्त' कहते हैं ('पुस्त' की मूर्ति वाली को पुस्तमयी कहेंगे)—

'मृदा वा दारुणा वाथ वस्त्रेणाप्यथ चर्मणा।
लोहरत्नैः कृतं वापि पुस्तमित्यभिधीयते॥

रामाश्रमी टीका—अमरकोष

'पुस्तं स्त्री हस्तनिर्यत्'.....वाग्भट।
'पुस्तं लेप्यादिकर्मणि'.....अमरकोष।

प्रस्तावना कपटनाटकस्य। कदलिका कामकरिणः। वध्यशाला साधुभावस्य। राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य।

अन्वयः—(इयं) कपटनाटकस्य प्रस्तावना (अस्ति)। कामकरिणः कदलिका (अस्ति)। साधुभावस्य वध्यशाला (अस्ति)। धर्मेन्दुमण्डलस्य राहुजिह्वा (अस्ति)।

शब्दार्थः—(इयं) कपटनाटकस्य = (यह लक्ष्मी) कपटरूपी नाटक का। प्रस्तावना = आमुख है। कामकरिणः = कामदेव रूपी गजराज का। कदलिका= केले का बगीचा है। साधुभावस्य = सुजनता का (को)। वध्यशाला (अस्ति)= वध करने का स्थान (है)। धर्मेन्दुमण्डलस्य = धर्मरूपीचन्द्रमण्डल का (के लिये)। राहुजिह्वा=राहु की जीभ है।

अलंकारः—यहाँ 'प्रस्तावना' से 'मण्डलस्य' तक रूपक अलंकार है :

१. नाटक में जहाँ सूत्रधार नटी, मार्ष (पारिपार्श्विक) या विदूषक के साथ बात करते हुए विचित्र उक्ति के द्वारा कथावस्तु का संकेत कर अपने कार्य का वर्णन करता है, उसे 'प्रस्तावना' कहते हैं। इस प्रस्तावना के कथोद्घात, प्रवृत्तक और प्रयोगातिशय ये तीन भेद होते हैं :—

सूत्रधारो नटीं ब्रूते मार्षं वाथ विदूषकम्।
स्वकार्यं प्रस्तुताक्षेपिचित्रोक्त्या यत्तदामुखम्॥
प्रस्तावना वा तत्र स्युः कथोद्घातः प्रवृत्तकम्।
प्रयोगातिशयश्चाथ वीथ्यंगानि त्रयोदश॥

दशरूपक-प्रकाश-३, श्लोक ७,८

1:57 PM

Sanskrit Dept. R.K.D...
Madhu. R K, Principal R, You

0:15 5a55ea5cf8f94c... 10:55 am

शुकनासोपदेश के आगे का संस्कृत गद्य भाग। 10:55 am

0:24 2006ba6b16914... 10:56 am

उपरोक्त गद्य भाग का हिंदी अर्थ 10:56 am

महाकवि बाणभट्ट कृत कादंबरी के शुकनासोपदेश के उपरोक्त गद्य भाग में महामंत्री शुकनास भावी युवराज चन्द्रापीड को लक्ष्मी के दोषों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार सूत्रधार आदि प्रवेशात्मक प्रस्तावना से नाटक का प्रारंभ होता है उसी प्रकार लक्ष्मी से छलनाओं का श्री गणेश होता है। जिस प्रकार मत्त गजेंद्र केले के वन में विहार करते हैं उसी प्रकार कामदेव भी लक्ष्मी की छाया में ही पलता है। जिस प्रकार वध्यशाला प्राणियों को मौत के घाट उतार देती है उसी प्रकार लक्ष्मी भी मनुष्य के सज्जनता को समाप्त कर देती है। जिस प्रकार राहु की रसना चंद्रमा को निकल जाती है उसी प्रकार लक्ष्मी भी धर्म को निकल जाती है। 11:20 am

उपरोक्त गद्य भाग में 'प्रस्तावना' से 'मण्डलस्य' तक रूपक अलंकार है।
जब गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय को ही उपमान बता दिया जाए यानी उपमेय और उपमान में अभिन्नता दर्शायी जाए तब वह 'रूपक अलंकार' कहलाता है। 11:51 am

Type a message